

# दाखिला

भरी पिछली कहानी मेरी बहन की प्रवेश परीक्षा में आपने पढ़ा कि कैसे मेरी और सुगन्धा की प्रवेश परीक्षाएँ अधूरी रह गई थीं। अब आगे... काशी हिंदू विश्वविद्यालय की प्रवेश... [Continue Reading]

"

...

Story By: (kumarboson)

Posted: सोमवार, नवम्बर 22nd, 2010

Categories: रिश्तों में चुदाई Online version: <u>दाखिला</u>

## दाखिला

मेरी पिछली कहानी
मेरी बहन की प्रवेश परीक्षा

में आपने पढ़ा कि कैसे मेरी और सुगन्धा की प्रवेश परीक्षाएँ अधूरी रह गई थीं। अब आगे...

काशी हिंदू विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा के दो सप्ताह बाद सुगन्धा को इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा देनी थी। मैंने पिछली कहानी में ही जिक्र कर दिया था कि उन दिनों मैं इलाहाबाद में किराए पर कमरा लेकर भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी कर रहा था।

मेरा कमरा प्रयाग स्टेशन से दो मिनट की दूरी पर था। मेरे मकान मालिक स्टेट बैंक आफ़ इंडिया में प्रबंधक थे। वो, उनकी माँ, उनकी पत्नी और उनकी बेटी वहाँ रहते थे।

उनका एक बेटा भी था जो पंतनगर से याँत्रिक अभियाँत्रिकी में स्नातक कर रहा था।

उनका मकान दो मंजिला था लेकिन ऊपर की मंजिल पर केवल एक कमरा, रसोई और बाथरूम थे जो उन्होंने मुझे किराए पर दे रखा था। उनका परिवार नीचे की मंजिल में रहता था। ऊपर चढ़ने के लिए घर के बाहर से ही सीढ़ियाँ थीं ताकि किराएदार की वजह से उन लोगों को कोई परेशानी न हो।

मकान मालिक मुझे बहुत पसंद करते थे। कारण था कि मैं अपनी पढ़ाई लिखाई में ही व्यस्त रहता था। मेरे दोस्त भी एक दो ही थे और वो भी बहुत कम मेरे पास आते थे। लड़कियों से तो मेरा दूर दराज का कोई नाता नहीं था। उनकी बेटी मुझे भैय्या कहती थी। जब मैं सुगन्धा के साथ प्रयाग स्टेशन पर उतरा तो मेरा दिल जोर जोर से धड़क रहा था। बनारस से लौटने के बाद मैं इलाहाबाद चला आया था।

कल रात सुगन्धा को इलाहाबाद लाने के लिए गाँव रवाना हुआ था। उस समय से ही सुगन्धा के साथ फिर से रात गुजारने के बारे में सोच-सोच कर मेरे लिंग का बुरा हाल था।

सुगन्धा ने सलवार सूट पहना हुआ था और देखने में बिल्कुल ही भोली भाली और नादान लग रही थी।

मैं उसको लेकर पहले मकान मालिक के पास गया। उनको बताना जरूरी था कि सुगन्धा कौन थी और मेरे साथ क्या कर रही थी।

मकान मालिक कहीं बाहर गए हुए थे। मैंने मकान मालिकन का परिचय सुगन्धा से कराया और यह भी बताया कि यह इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा देने आई है। अगर इसका दाखिला हो गया तो यहीं महिला छात्रावास में रहकर पढ़ाई करेगी।

परिचय कराने के बाद मैं सुगन्धा को लेकर ऊपर गया। सुगन्धा के अंदर आते ही मैंने दरवाजा अंदर से बंद कर लिया। मुझे पता था कि अब यहाँ कोई नहीं आने वाला।

सुगन्धा मेरी तरफ देख रही थी, मैंने तुरंत उसे कसकर अपनी बाहों में भर लिया। उफ़ क्या आनन्द था।

वो भी लता की तरह मुझसे लिपटी हुई थी।

फिर मैंने उसे चूमना शुरू किया गाल, गर्दन, पलकें, ठोढ़ी और होंठ। उसके होंठ बहुत रसीले नहीं थे।

मैंने अपनी जीभ से उसके होंठ खोलने चाहे लेकिन उसने मुँह नहीं खोला।

फिर मैंने अपना एक हाथ उसके सूट के अंदर डाल दिया और उसके रसीले संतरों को

मसलने लगा। उसके चूचूकों को अपनी दो उँगलियों के बीच लेकर रगड़ने लगा तो उसके मुँह से सिसकारियाँ निकलने लगीं।

सुगन्धा ने धीरे से कहा- भैय्या कोई आ जाएगा।

मैंने भी उतने ही धीरे से जवाब दिया- यहाँ कोई नहीं आता मेरी जान, आज मुझे मत रोको। तुम नहीं जानती पिछले दो हफ़्ते मैंने कैसे गुजारे हैं तुम्हारी याद में। प्लीज आज मुझे मत रोको सुगन्धा, प्लीज।'

ऐसा कहने के बाद मेरे हाथ उसके सलवार के नाड़े से उलझ गए। कुछ ही पलों बाद उसकी सलवार उसके घुटनों के नीचे गिरी हुई थी और उसकी चिकनी जाँघें खिड़की के पर्दे से छनकर आ रही रोशनी में चमक रही थीं।

मैं तुरंत घुटनों के बल बैठ गया और उसकी चिकनी जाँघों को चूमने लगा। मेरे हर चुम्बन पर वो सिहर उठती थी।

फिर मैंने उसका कमीज़ ऊपर उठाया। उसने गुलाबी रंग की पैंटी पहन रखी थी। कमीज़ उठाते हुए मैंने उसके शरीर से बाहर निकाल दिया। अब वो सफेद बनियान और गुलाबी पैंटी में मेरे सामने खड़ी थी।

उफ़!क्या नजारा था!

कितना तरसा था मैं किसी लड़की को इस तरह देखने के लिए। फिर मैंने उसकी बनियान उतारनी शुरू की। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। मैंने पूछा-क्या हुआ ?'

वो बोली- वो पर्दा ठीक से बंद नहीं है।'

ये लड़िकयाँ भी जब देखो तब खड़े लिंग पर डंडा मार देती हैं। अरे यहाँ कुत्ता भी नहीं

आता। पर्दा न भी लगाऊँ तो भी कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा, मैंने सोचा।

बहरहाल मैं उसको नाराज नहीं करना चाहता था। मैंने पर्दा अच्छी तरह से खींच-खींचकर बंद किया।

फिर मैं उसके पास आया और बिना देर किए उसकी बिनयान उतार दी। उसने शर्म के मारे अपनी हथेलियों में मुँह छिपा लिया। उसके हल्के साँवले उरोज मेरी तरफ तने हुए थे, जिनके बीचोंबीच छोटे छोटे कत्थई रंग के चूचुक चूसने का निमंत्रण दे रहे थे।

मैंने दोनों उरोजों को अपनी हथेलियों में लेकर सहलाना शुरू कर दिया। उफ़ क्या आनन्द था। आज पहली बार मैं उसके चूचुकों को रोशनी में देख रहा था और उनसे खेल रहा था।

कुछ देर बाद मैंने उसके एक चूचुक को अपने होंठों के बीच दबा लिया। उसके मुँह से सीत्कार निकल पड़ी।

मैंने धीरे धीरे उसके चुचुकों को चूसते हुए उसके उभारों को और ज्यादा अपने मुँह में लेना शुरू किया।

उसका बदन मस्ती से काँपने लगा था।

यही क्रिया मैंने उसके दूसरे उभार के साथ भी दहराई।

फिर मैंने अपने कपड़े उतारने शुरू किये। अंडरवियर को छोड़कर मैंने सबकुछ उतार दिया। सुगन्धा अभी तक अपना मुँह हथेलियों में छुपाये हुये थी।

मैंने उसकी हथेलियाँ पकड़ीं और उसके मुँह से हटाकर अपनी कमर पर रख दीं और उसे खुद से चिपका लिया। उसके उरोज मेरे सीने से चिपक गये। कुछ भी कहिये, जो मजा किसी काम को पहली बार करने में आता है वो उसके बाद फिर कभी नहीं आता। मैंने उसके नंगे बदन को चूमना शुरू किया। नीचे आते हुए जब मैंने उसकी पैंटी को चूमा तो उसने मेरे बाल पकड़ लिये।

मैंने अपनी उँगलिया पैंटी की इलास्टिक में फँसाई और उसके घुटनों से नीचे खींच दिया। फिर मैं अपना मुँह उसकी योनि के पास ले आया।

इस बार मैं इतना उत्तेजित था कि योनि की अजीब सी गंध भी मुझे अच्छी लग रही थी। उसने अभी योनि के बाल साफ करना शुरू नहीं किया था।

मैंने उँगलियों से उसकी योनि की संतरे जैसी फाँकें फैला दीं तो हल्का साँवला रंग अंदर गहराई में जाकर लाल रंग में बदलता हुआ दिखा। इसी लाल गुफा के अंदर जीवन का सारा आनन्द छुपा हुआ है, मैंने सोचा।

जहाँ से दरार शुरू हो रही थी उसके ठीक नीचे मटर के फूल जैसी एक संरचना थी। मुझे प्रेम गुरू की कहानियाँ पढ़ने के बाद पता चला कि उसे भगनासा कहते हैं।

मैंने अपनी जुबान उस मटर के फूल से सटा दी। सुगन्धा चिहुँक पड़ी। उसने मेरे बालों को और कस कर जकड़ लिया। मैंने अपनी जुबान उस फूल पर फिरानी शुरू की तो सुगन्धा के शरीर का कंपन बढ़ने लगा।

इस अवस्था में अब और ज्यादा कुछ कर पाना संभव नहीं था तो मैं खड़ा हुआ और उसे अपनी गोद में उठाकर बिस्तर पर ले गया। बिस्तर क्या था, दो फ़ोल्डिंग चारपाइयाँ एक दूसरे से सटाकर उन पर दो सिंगल बेड वाले गद्दे बिछा दिए गए थे।

दूसरा फोल्डिंग बेड मैं तभी बिछाता था जब गाँव से कोई दोस्त या पिताजी आते थे वरना उसको मोड़कर पहले वाले फोल्डिंग बेड के नीचे डाल देता था। इस बार गाँव जाने से पहले मैं दोनों फ़ोल्डिंग बेड बिछा कर गया था। उसके ऊपर चादर बिछी हुई थी, मैंने सुगन्धा को लिटा दिया।

पैंटी और सलवार अभी भी उसके पैरों से लिपटे हुए थे, मैंने उन्हें भी उतारकर बेड से नीचे फेंक दिया।

अब वो बिल्कुल निर्वस्त्र मेरे सामने पड़ी हुई थी और मैं खिड़की से छनकर आती रोशनी में उसका शानदार जिस्म देख रहा था।

थोड़ी देर उसका जिस्म निहारने के बाद मैंने उसके घुटने मोड़ कर खड़े कर दिये और टाँगें चौड़ी कर दीं।

फिर मैं अपना मुँह उसकी टाँगों के बीच करके लेट गया। उँगलियों से उसकी योनि की फाँको को इतना फैलाया कि उसकी सुरंग का छोटा सा मुहाना दिखाई पड़ने लगा।

मैंने सोचा कि इतने छोटे से मुहाने से मेरा इतना मोटा लिंग एक झटके में कैसे अंदर जा पाता। मस्तराम वाकई हवाई लेखन करता है। मैंने अपनी जीभ उस छेद से सटा दी।

मेरी जुबान पर स्याही जैसा स्वाद महसूस हुआ। मैंने जुबान अंदर घुसाने की कोशिश की तो सुगन्धा ने अपने नितंब ऊपर उठा दिये। अब उसकी योनि का छेद थोड़ा और खुल गया और मुझे जुबान का अगला हिस्सा अंदर घुसाने में आसानी हुई।

फिर मैंने अपनी जुबान बाहर निकाली और फिर से अंदर डाल दी। उसके शरीर को झटका लगा। उसने अभी भी नितंब ऊपर की तरफ उठा रखा था। मैंने बगल से तिकया उठाया और उसके नितंबों के नीचे लगा दिया।

फिर मैंने अपनी तरजनी उँगली उसके छेद में घुसाने की कोशिश की। मेरी जुबान ने पहले ही गुफा को काफी चिकना बना रखा था। तरजनी धीरे धीरे अंदर घुसने लगी। जब उँगली अंदर चली गई तो मैं उसे अंदर ही मोड़कर उसकी योनि के आंतरिक हिस्सों को छुने लगा।

मुझे अपनी उँगली पर गीली रुई जैसा अहसास हो रहा था। कुछ हिस्से थोड़ा खुरदुरे भी थे। उनको उँगली से सहलाने पर सुगन्धा काँप उठती थी।

मैंने सोचा अब दो उँगलियाँ डाल कर देखी जाए। मैं तरजनी और उसके बगल की उँगली एक साथ धीरे धीरे उसकी गुफा में घुसेड़ने लगा। थोड़ी सी रुकावट और सुगन्धा के मुँह से एक कराह निकलने के बाद दोनों उँगलियाँ भीतर प्रवेश कर गईं।

अब सुगन्धा की गुफा से पानी का रिसाव काफी तेजी से हो रहा था। मैंने तिकया हटाया और उसकी जाँघें अपनी जाँघों पर चढ़ा लीं। फिर मैं अपना लिंग मुंड उसकी योनि पर रगड़ने लगा और वो अपनी कमर उठा उठा कर मेरा साथ देने लगी।

थोड़ी देर रगड़ने के बाद मैंने अपना गीला लिंग मुंड उसकी गुफा के मुहाने पर रखा और अंदर डालने के लिए जोर लगाया। उसके मुँह से फिर चीख निकली उसने पलट कर अपना मुँह तिकए में छुपा लिया।

मैं आश्चर्य चिकत रह गया कि यह आखिर क्या हुआ। मस्तराम की कहानियों के हिसाब से तो मुझे इसकी गुफा में प्रवेश कर जाना चाहिए था। अच्छा हुआ यहाँ कोई आता जाता नहीं वरना इसकी चीख मुझे संकट में डाल देती।

अचानक मेरे दिमाग को एक झटका लगा। मुझे अपनी छात्रावास की रैगिंग याद आ गई। जब हम सबको नंगा करके हमारे लिंग नापे गये थे और मुझे अपनी कक्षा के सबसे बड़े लंडधारक की उपाधि प्रदान की गई थी।

अच्छा तो इसलिए मुझको सफलता नहीं मिल रही है। सुगन्धा ठहरी कच्ची कली और मैं

ठहरा आठ इंच का लंडधारी। कहाँ से पहली बार में कामयाबी मिलती। अच्छा हुआ मैंने ज्यादा जोर नहीं लगाया।

मुझे याद आया कि मेरे सबसे छोटे चाचा कि पत्नी को सुहागरात के बाद अगले दिन अस्तपाल ले जाना पड़ा था। क्यों ? यह बात घर की महिलाओं के अलावा किसी को नहीं पता थी।

सुनने में आया था कि पुलिस केस होने वाला था मगर ले देकर रफ़ा दफ़ा किया गया। जरूर ये लंबा लिंग अनुवांशिक होता है और चाचा ने सुहागरात के दिन ज्यादा जोर लगा दिया होगा।

हे कामदेव, अच्छा हुआ मैंने खुद पर नियंत्रण रखा वरना आपके चक्कर में अर्थ का अनर्थ हो जाता।

मैं उठा और कमरे से सटी रसोई में जाकर एक कटोरी में थोड़ा सा सरसों का तेल ले आया। मैं सुगन्धा के पास गया और बोला- सुगन्धा इस बार धीरे से करूँगा। प्लीज बेबी करने दो ना।'

इतना कहकर मैंने उसको कंधे से पकड़कर खींचा। उसने कोई विरोध नहीं किया। मैंने उसे चित लिटा दिया। मैंने तरजनी उँगली तेल में डुबोई और उसकी गीली गुफा में घुसा दी।

एक दो बार अंदर बाहर करने से तेल गुफा की दीवारों पर अच्छी तरह फैल गया। फिर मैंने दो उँगलियाँ तेल में डुबोईं और अंदर डालकर तीन चार बार अंदर-बाहर किया।

गुफा का मुहाना अब ढीला हो चुका था। लेकिन इस बार मैं कोई जल्दबाजी नहीं करना चाहता था। मैंने तीन उँगलियाँ तेल में डुबोईं और उसकी गुफा में घुसाने लगा। थोड़ी दिक्कत के बाद तीन उँगलियाँ अंदर चली गईं। मेरी टूटती हुई हिम्मत वापस लौटी। लिंग महाराज जो जम्हाई लेने लगे थे उन्होंने एक शानदार अंगड़ाई ली और सचेतन अवस्था में वापस लौटे।

मैंने अपने लिंग पर तेल लगाना शुरू किया। सुगन्धा ज्यादातर समय आँखें बंद करके मजा ले रही थी। उसके लिए भी यह सब नया अनुभव था इसलिए उसका हिचकिचाना और शर्माना स्वाभाविक था।

जब लिंग पर तेल अच्छी तरह लग गया तब मैंने लिंगमुंड पर थोड़ा सा तेल और लगाया। इस बार मैं कोई कमी नहीं छोड़ना चाहता था। फिर मैंने उसकी जाँघें अपनी जाँघों पर रखीं। एक हाथ से अपना लिंग पकड़ा और उसकी योनि के मुँह पर रख दिया।

मेरा दिल जोर जोर से धड़क रहा था। मैंने थोड़ा जोर लगाया और मुझे उसकी गुफा का मुहाना अपने लिंगमुंड पर कसता हुआ महसूस हुआ। मैंने थोड़ा जोर और लगाया।

सुगन्धा थोड़ा कसमसाई पर बोली कुछ नहीं। फिर मैंने कामदेव का नाम लेकर हल्का सा झटका दिया और इस बार लगा कि जैसे मेरे लिंगमुंड की खाल चिर गई हो।

सुगन्धा के मुँह से भी कराह निकली मगर कामदेव की कॄपा से इस बार लिंगमुंड अंदर चला गया था।

सुगन्धा ने अपनी कमर हिलाने की कोशिश की लेकिन मैंने उसकी जाँघें कसकर पकड़ रखी थीं।

वो हिल नहीं पाई।

एक दो बार और कोशिश करने के बाद वो ढीली पड़ गई। मैं प्रतीक्षा करता रहा। जब मुझे लगा कि अब यह मेरा लिंग बाहर निकालने की कोशिश नहीं करेगी तब मैंने उसकी जाँघें छोड़ दीं और लिंग पर दबाब बढ़ाया। मेरा लिंग थोड़ा और अंदर घुसा। क्या कसाव था, क्या आनन्द था।

मैंने लिंग थोड़ा सा बाहर खींचा और फिर दबाव बढ़ाते हुये अंदर डाल दिया। धीरे धीरे मैं लिंग अंदर बाहर कर रहा था। लेकिन मैं लिंगमुंड को बाहर नहीं आने दे रहा था।

क्या पता सुगन्धा दुबारा डलवाने से मना कर दे। लिंग और योनि पर अच्छी तरह लगा हुआ सरसों का तेल मेरे प्रथम संभोग में बहुत सहायता कर रहा था।

फिर मैंने लिंग अंदर बाहर करने की गति थोड़ा और बढ़ा दी। लिंग अभी भी पूरा नहीं घुसा था लेकिन अब सुगन्धा मेरे हर धक्के पर अपना नितंब उठा उठाकर मेरा साथ दे रही थी।

अब मैं आश्वस्त हो गया था कि लिंग निकल भी गया तो भी सुगन्धा दुबारा डालने से मना नहीं करेगी।

मैंने लिंग निकाला और मैं सुगन्धा के ऊपर लेट गया। लिंग मैंने हाथ से पकड़कर उसकी योनि के द्वार पर रखा और फिर से धक्का दिया सुगन्धा को थोड़ी सी दिक्कत इस बार भी हुई लेकिन वो सह गई।

उसे भी अब पता चल गया था कि लिंग और योनि के मिलन से कितना आनन्द आता है। पहले धीरे धीरे फिर तेजी से मैं धक्के लगाने लगा।

धीरे धीरे मैं आनन्द के सागर में गहरे और गहरे उतरता जा रहा था।
पता नहीं कैसे मेरे मुँह से ये शब्द निकलने लगे- सुगन्धा, मेरी जान! दो हफ़्ते कितना मुट्ठ
मारा है मैंने तुम्हें याद कर करके। आज मैं तुम्हारी चूत फाड़ दूँगा रानी। आज अपना सारा
वीर्य तुम्हारी चूत में डालूँगा मेरी जान। ओ सुगन्धा मेरी जान। पहले क्यूँ नहीं मिली मेरी
जान। इतनी मस्त चूत अब तक किसलिए बचा के रखी थी रानी। फट गई न तेरी चूत,

बता मेरी जान फट गई ना।

सुगन्धा भी अपना नियंत्रण खो चुकी थी, वो बोली-हाँ भैय्या, फट गई, आपने फाड़ दी मेरी चूत भैय्या।

पता नहीं और कौन कौन से शब्द उस वक्त हम दोनों के मुँह निकले। हम दोनों ही होशोहवास में नहीं थे। मेरा लिंग उसकी गहराइयों में उतरता जा रहा था। जाँघों पर जाँघें पड़ने से धप धप की आवाज पूरे कमरे में गूँज रही थी। लिंग और योनि एक साथ फच का मधुर संगीत रच रहे थे।

थोड़ी देर बाद सुगन्धा ने मुझे पूरी ताकत से जकड़ लिया और उसका बदन सूखे पत्ते की तरह काँपने लगा।

मैं धक्के पर धक्का मारे जा रहा था और कुछ ही पलों बाद मेरे भीतर का सारा लावा पिघल पिघलकर उसकी प्यासी धरती के गर्भ में गिरने लगा।

दस मिनट तक हम दोनों ऐसे ही लेटे रहे। फिर मैं उसके ऊपर से नीचे उतरा। तेल की कटोरी बिस्तर पर लुढ़की पड़ी थी। चादर खराब हो चुकी थी।

वो उठी और बाथरूम गई।

मैं उसके हिलते हुए नितंबों को देख रहा था। यह कहानी आप अन्तर्वासना.कॉम पर पढ़ रहे हैं।

वो वापस आई और अपने कपड़े पहनने लगी, पहनते पहनते वो बोली- लगता है मुझे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दाखिला मिल जाएगा। मैंने पूछा- क्यूँ ?

वो बोली- चचेरी सही तो क्या हुआ बहन तो आपकी ही हूँ। जब आज आपको दाखिला

मिल गया तो मुझे भी मिल ही जाएगा।

एक बार फिर मेरे मुँह से बेसाख्ता हँसी निकल गई। इस लड़की का सेंस आफ़ ह्यूमर भी न, कमाल है।

वो फिर बोली- और आप कितनी गंदी गंदी बातें कर रहे थे। शर्म नहीं आती आपको ऐसे गंदे गंदे शब्द मुँह से निकालते हुए।

मैंने सोचा ये देहाती लड़िकयाँ भी न, इनको करने में शर्म नहीं आती लेकिन बोलने में बड़ी शर्म आती है लेकिन मैंने कहा- सारी बेबी आगे से नहीं कहूँगा।

उस रात भी मैं करना चाह रहा था लेकिन वो बोली कि उसकी योनि में दर्द हो रहा है तो मुझे हस्तमैथुन करके काम चलाना पड़ा।

प्रवेश परीक्षा के परिणाम घोषित हुए तो उसका दाखिला सचमुच हो गया था।

आखिर बहन तो मेरी ही है चचेरी सही तो क्या हुआ, सोचकर मैं हँस पड़ा।

चलो अब तो वो यहीं रहेगी इलाहाबाद में, छुट्टी के दिन बुला लिया करूँगा।

पाठकों की राय लेखक के लिए अमृत का कार्य करती है। मेरी कहानियाँ प्रवेश परीक्षा और दाखिला आपको कैसी लगीं मुझे जरूर बतायें। कुछ बदलाव चाहिये तो वो भी सुझा सकते हैं।

kumarboson@gmail.com



### Other sites in IPE

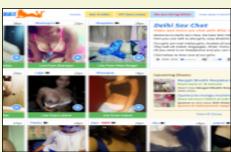
#### **Indian Gay Porn Videos**



URL: www.indiangaypornvideos.com

Average traffic per day: 10 000 GA sessions Site language: Site type: Video Target country: India Welcome to the world of gay porn where you will mostly find Indian gay guys enjoying each other's bodies either openly for money or behind their family's back for fun.

#### **Delhi Sex Chat**



URL: www.delhisexchat.com Site language: English Site type: Cams Target country: India Are you in a sexual mood to have a chat with hot chicks? Then, these hot new babes from DelhiSexChat will definitely arouse your mood.

#### Bangla Choti Kahini



URL: www.banglachotikahinii.com

Average traffic per day: GA sessions Site language: Bangla, Bengali Site type: Story Target country: India Bangla choti golpo for Bangla choti lovers.

#### **Antarvasna Hindi Stories**



URL: www.antarvasnahindistories.com

Average traffic per day: New site Site language: Hindi Site type: Story Target country: India Antarvasna Hindi Sex stories gives you daily updated sex stories.

#### Savita Bhabhi Movie



URL: <a href="www.savitabhabhimovie.com">www.savitabhabhimovie.com</a> Site language: English (movie - English, Hindi) Site type: Comic / pay site Target country: India Savita Bhabhi Movie is India's first ever animated erotic movie.

#### **Aflam Porn**



URL: www.aflamporn.com Average traffic per day: 270 000 GA sessions Site language: Arabic Site type: Video Target country: Arab countries Porn videos from various "Arab" categories (i.e Hijab, Arab wife, Iraqi sex etc.). The site in intended for Arabic speakers looking for Arabic content.